सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन के सिद्धान्त

* सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन से तात्पर्य

* सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन का सिद्धान्त

* सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन का उदारवादी सिद्धान्त

* सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन के उदारवादी सिद्धान्त का आलोचना तथा महत्व

* महत्वपूर्ण प्रश्न

Scanned with CamScanner

सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन से तात्पर्य

परिवर्तन का सामान्य तात्पर्य है — किसी क्रिया अथवा वस्तु की पहले की स्थिति में बदलाव आ जाना।

सामाजिक परिवर्तन का अभिप्राय समाज एवं उसकी संरचना में होने वाले परिवर्तन से लगाया जाता ~~सकता~~ है। किंग्सले डेविस के अनुसार, " सामाजिक परिवर्तन से हम केवल उन्हीं परिवर्तनों को समझते हैं जो सामाजिक संगठन अर्थात समाज के ढाँचे और प्रकार्यों में घटित होते हैं।"

राजनीतिक परिवर्तन एक बहुमुखी प्रक्रिया है। यह नागरिकों के मानकों, विचारों, दृष्टिकोणों तथा इनके परिणामस्वरूप संरचनाओं, संगठनों के परिवर्तन से सम्बन्धित है। इस परिवर्तन में न केवल संस्थागत परिवर्तन सम्मिलित हैं बल्कि नागरिकों के मनोवैज्ञानिक - दार्शनिक - वैचारिक परिवर्तन भी सम्मिलित है।

राजनीतिक परिवर्तन, सामाजिक परिवर्तन का ही एक रूप है।

Scanned with CamScanner

सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन के सिद्धान्त

सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन किन कारणों से तथा किन नियमों के आधार पर होते हैं, उनकी दिशा क्या होती है तथा क्या होनी चाहिए; इस बात को लेकर अनेक विद्वान अपने-अपने विचार व्यक्त करते रहे हैं। इस प्रसंग में प्रमुख रूप से दो सिद्धान्त प्रतिपादित किए गए हैं, ये सिद्धान्त हैं — (1) उदारवादी सिद्धान्त और (2) मार्क्सवादी सिद्धान्त।

सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन का उदारवादी सिद्धान्त

सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन के सिद्धान्त के रूप में उदारवाद के कुछ प्रमुख सिद्धान्त इस प्रकार हैं —

(1) इतिहासवाद का खण्डन →

उदारवादी सिद्धान्त के एक प्रमुख प्रतिपादक पॉपर ने 'इतिहासवाद' को 'मिथ्या विज्ञान' की श्रेणी में रखा है। इतिहासवाद

Scanned with CamScanner

से उसका अभिप्राय है, यह विश्वास कि ऐतिहासिक परिवर्तन इतिहास के बंधे बंधाए नियमों से संचालित होते हैं। समाज विज्ञान की सहायता से उन नियमों का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है, उनके आधार पर भविष्यवाणी की जा सकती है तथा हमें अपनी राजनीति को इन नियमों के अनुसार ही ढालना चाहिए।

पॉपर का तर्क है कि ऐसा कोई नियम नहीं हो सकता, जो सम्पूर्ण ऐतिहासिक प्रक्रिया पर लागू हो सके, क्योंकि प्रत्येक ऐतिहासिक परिवर्तन एक विलक्षण घटना होती है। इतिहासवाद का आश्रय लेते हुए व्यक्ति की सोचने विचारने की शक्ति तथा स्वयं अपना मार्ग चुनने की प्रवृत्ति की अवहेलना की जाती है, जिसे स्वीकार नहीं किया जा सकता है।

(2) मानव की विवेकशीलता में विश्वास →

उदारवादी सिद्धान्त का आधारभूत तत्व मानवीय बुद्धि और विवेक में मूलभूत आस्था है। वे मनुष्य को विवेकशील प्राणी मानते हैं जो अपनी सूझ-बूझ, परिश्रम और संकल्प शक्ति के बल पर

Scanned with CamScanner

सामाजिक संस्थाओं को मनचाहा रूप दे सकता है, उनका निर्माण और पुनर्निर्माण कर सकता है। अतः इस विचार को अपनाने का कोई आधार नहीं बनता है कि मानव इतिहास किसी पूर्व निर्धारित योजना के अनुसार आगे बढ़ता है जिस पर मानव का कोई नियन्त्रण नहीं है।

(3) क्रान्ति का विरोध और क्रमिक वृद्धि के सिद्धान्त का प्रतिपादन →

उदारवादी सिद्धान्त व्यवस्था में परिवर्तन का पक्षधर है। लेकिन उदारवाद के अनुसार परिवर्तन की पद्धति या साधन के रूप में क्रान्ति को नहीं, वरन् क्रमिक सुधार के मार्ग को अपनाया जाना चाहिए। इसे क्रमिक वृद्धि का सिद्धान्त भी कहा जाता है, क्योंकि इसमें थोड़ा-थोड़ा करके आगे बढ़ते हैं।

सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन के उदारवादी सिद्धान्त का आलोचना तथा महत्व

परिवर्तन का उदारवादी सिद्धान्त निश्चित रूप से श्रेष्ठ प्रतीत होता है, लेकिन कुछ कठिनाइयां और आपत्तियां

Scanned with CamScanner

अवश्य ही है। उदारवादी सिद्धान्त के आधार पर जब हम वांछित सामाजिक परिवर्तन की दिशा में आगे बढ़ते हैं, तब इन परिवर्तनों से जिन निहित स्वार्थों पर आघात पहुँचने की आशंका होती है, वे निहित स्वार्थ एवं परिवर्तनों का विरोध करने के लिए संगठित हो जाते हैं और वांछित सामाजिक परिवर्तन या लोककल्याण की दिशा में परिवर्तन की स्थिति को प्राप्त कर पाना सम्भव नहीं रहता। क्योंकि सुधारवादियों की तुलना में निहित स्वार्थों की शक्ति अधिक होती है।

उदारवादी सिद्धान्त की आलोचना करते हुए यह भी कहा जाता है कि इस सिद्धान्त में मानवीय विवेक को सर्वोपरि महत्व प्रदान करते हुए उसे समस्त घटनाक्रम का सूत्रधार बतलाया गया है जो अनुचित है।

इन सबके अतिरिक्त आलोचक यह भी कहते हैं कि क्रमिक सुधार तो पैबन्द के समान होते हैं और किन्हीं पैबन्दों से व्यवस्था में मूल परिवर्तन सम्भव नहीं होता।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि यद्यपि उपर्युक्त आलोचनाओं में कुछ दम हो सकता है, लेकिन इसके बावजूद

यह तथ्य है कि सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन के मार्क्सवादी सिद्धान्त की तुलना में उदारवादी सिद्धान्त और क्रान्ति या हिंसात्मक पद्धति की तुलना में सुधार की पद्धति ही श्रेष्ठ है। यदि किसी देश में पर्याप्त मात्रा में सामाजिक और राजनीतिक जागरूकता हो, तब तो उदारवादी सिद्धान्त समस्त व्यवस्था में वांछित परिवर्तन लाने की दिशा में निश्चित रूप से श्रेष्ठ सिद्ध होता है।

महत्वपूर्ण प्रश्न

(1) सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन के उदारवादी सिद्धान्त की व्याख्या कीजिए।

Scanned with CamScanner